शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

उपनिषद : भारतीय ज्ञानपरंपरा के संवाहक

डा० अशोक त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर
एस०डी० (पी०जी०) कॉलेज, मुजफ्फरनगर, (उ०प्र०)

सारांश

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक उपनिषद मनुष्य की आध्यात्मिक, नैतिक, मानसिक, सामाजिक व दार्शनिक उन्नति का साधन हैं। आत्मविद्या तथा ब्रह्मविद्या का अप्रतिम विवेचन उपनिषदों में हुआ है। इनके अध्ययन से पाठक के मन में एक नवीन शक्ति तथा स्फूर्ति का संचार होता है। उपनिषद भारतीय तत्व ज्ञान और धर्मसिद्धांतों का मूल स्रोत हैं तथा मानव चेतना का सर्वोच्च प्रतिफल हैं। सांसारिक मृग तृष्णा में फँसें मानव मन को उपनिषद आध्यात्मिक ज्ञान की निर्मल पयस्विनी में स्नान कराते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत, आत्मा, परमात्मा आदि के सम्बन्ध में बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों का उत्तर उपनिषदों में ही मिलता है। इनका प्रभाव सार्व भौमिक है तथा देश–विदेश के विद्वानों ने मुक्त कंठ से इनकी प्रशंसा की है तथा इन्हें विश्व की धरोहर बताया है।

महत्वपूर्ण शब्द

ब्रह्म, जीव, आत्मा, परमात्मा, जगत, जड़–चेतन, सगुण–निर्गुण, आत्मोन्नति, ब्रह्मविद्या, आत्मविद्या, माया, अमरता, पुनर्जन्म, नेति–नेति आदि।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डा० अशोक त्रिपाठी,

''उपनिषद : भारतीय ज्ञानपरंपरा के संवाहक''

शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 235–241
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 34

डा० अशोक त्रिपाठी

उपनिषद भारतीय आध्यात्म शास्त्र तथा मानवीय मेधा की पराकाष्ठा को प्रदर्शित करने वाला अनुपम साहित्य है, जिनकी प्रभा पर काल का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। उपनिषद वैदिक वाङ्मय का एक महत्वपूर्ण भाग हैं तथा भारतीय ज्ञान परम्परा का संवाहक हैं। इनकी संख्या 108 से लेकर 300 तक मानी जाती है। विद्वानों का मत है कि उपनिषद किसी एक शताब्दी की रचना न होकर अनेक शताब्दियों के साहित्यिक प्रयास के फल हैं।[1] वेद भारतीय ज्ञान–विज्ञान के उद्गम केंद्र हैं। उनके महत्वपूर्ण स्थलों का विस्तार उपनिषदों में हुआ है। इसमें आध्यात्म और अलौकिक विद्या के गूढ़ रहस्यों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है।[2] आत्मविद्या का, ब्रह्मविद्या के रहस्य का उपनिषदों में भली–भाँति विवेचन हुआ है।[3] वेद की यदि एक पुरुष के रूप में कल्पना की जाय तो उपनिषद को उसका शिर मानना पड़ेगा। कहा जाता है कि वेद गाय का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा उपनिषद दूध का। हमें दूध के लिए गाय की आवश्यकता पड़ती है और पोषण के लिए दूध की। उपनिषद इस बात के द्योतक हैं कि प्राचीन भारत में हिंदुओं ने सर्वोच्च बौद्धिक उपलब्धि प्राप्त करली थी जो अतुलनीय थी। आधुनिक युग में, जब घोर भौतिकतावाद में डूबा विश्व नाना प्रकार के संकटों से घिरा हुआ है, उपनिषदों में सन्निहित ज्ञान ही हमारा पथ प्रशस्त कर सकता है। शंकराचार्य के अनुसार उपनिषद जन्मजात अज्ञान का नाश करते हैं।[4] कठोपनिषद की प्रस्तावना में शंकराचार्य लिखते हैं कि मुमुक्षुओं की संसार–बीज भूत–अविद्या नष्ट हो जाती है और जो विद्या दुःखों को शिथिल बनाते हुए ब्रह्म की प्राप्ति करा देती है।[5]

उपनिषदों का महत्व 'उपनिषद' शब्द की व्युत्पत्ति से ही झलकता है। 'उपनिषद' शब्द उप + नि + सद् धातु से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है शिष्य का गुरु के समीप रहस्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए बैठना। 'सद्' धातु के तीन अर्थ होते हैं– (1) विशरण या नाश होना (2) गति प्राप्त होना (3) अवसादन अथवा शिथिल करना।[6] उपनिषद का मुख्य अर्थ आध्यात्म विद्या है जिसके अध्ययन से मुमुक्षु लोगों की अविद्या नष्ट हो जाती है। इस विद्या से गर्वभास आदि नाना प्रकार के दुःख शिथिल हो जाते हैं। उपनिषद का गौण अर्थ ब्रह्मविद्या के प्रतिपादक ग्रंथ से है। वैदिक साहित्य में उपनिषदों का स्थान सग से अंत में आता है इस लिए उसे **'वेदांत'** भी कहते हैं। भारतीय महर्षियों ने अपने प्रतिभा चक्षु से जिन आध्यात्मिक तत्वों का साक्षात्कार किया था उन्हीं का भंडार उपनिषदों में भरा हुआ है। भारतीय साहित्य को आध्यात्मिकता की ओर झुकाने का सारा श्रेय इन्हीं ग्रंथ रत्नों को है।[7]

वेदों के बाद उपनिषद मनुष्य व ब्रह्माण्ड की एकता को रेखांकित करते हैं तथा यथार्थ की पकृति के विषय में प्रगाढ़ व ईमानदार शोध का गठन करते हैं। यह शोध एक–दूसरे से स्नेह रखने वाले गुरु–शिष्य के मध्य वार्तालाप के माध्यम से आता है और विभिन्न गूढ़ रहस्य अनावृत्त होते हैं।[8] उपनिषदों के भारतीय संस्कृति पर प्रभाव के निर्धारण के लिए यह आवश्यक है कि उपनिषदों में विहित सिद्धांतों का विश्लेषण किया जाय। धर्मशास्त्र व रूढ़िवाद से मुक्त उपनिषद करोड़ों हिंदुओं व गैर–हिंदुओं के लिए मार्गदर्शन तथा प्रेरणा के स्रोत हैं। उपनिषदों में अनेक दार्शनिक प्रश्नों जैसे– जीवन का उद्देश्य, सृष्टि की रचना, समय की अवधारणा, आकाश व पदार्थ, ब्रह्म, आत्मा, माया, अमरता, पुनर्जन्म, कर्म तथा जगत आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है और उनका उत्तर ढूँढने का प्रयास किया गया है।[9] उपनिषदों के अनुसार मानव

का ध्येय सुख प्राप्ति है और सुख तभी संभव है जब मानव की आत्मा मृत्यु एवं जन्म के बंधान से छूट जाय। यदि ब्राह्मण साहित्य गार्हस्थ्य जीवन में होने वाले कर्मकाण्ड की व्याख्या है तो आरण्यक व उपनिषद एकांत निरवछन्न अरण्य में ब्रह्मचर्य से परिपूर्णवान प्रस्थियों के लिए गंभीर बौद्धिक चिंतन है।[10]

उपनिषदों में प्राप्त हाने वाले भाव किसी एक दार्शनिक अथवा दार्शनिकों के एक संप्रदाय के भावन हीं हैं जिनका अन्वेषण किसी शिक्षा–पद्धति के अनुसार किया जा सके। वे तो विभिन्न व्यक्तियों की भावनाएँ हैं जो विभिन्न काल में विस्तार के साथ मुखरित हुईं। अतएव, उन भिन्न–भिन्न तथा परस्पर विरोधी सिद्धांतों का मिलना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, परंतु यह विरोध केवल ऊपरी है। भीतर प्रवेश करने पर एक तात्विक व्यवस्था मिलती है जिसके अनुसार इस जगत की पहेली को भली–भाँति सुलझाने का मार्ग निर्दिष्ट किया गया है। **'ब्रह्म'** एवं **'आत्मा'** दो ऐसे तत्व हैं जिनके इर्द–गिर्द दर्शन शास्त्रियों के मन का ताना–बाना बुना गया है।[11] उपनिषदों के अनुसार ब्रह्म ही वह शाश्वत पदार्थ है जो सृष्टि की रक्षा करते हुए सृष्टि को अपने में विलीन करलेता है। उपनिषदों में विद्वानों ने सर्वत्र **'ब्रह्म तथा जगत का एकत्व'** प्रतिपादित किया है। आत्मा तथा परमात्मा का शुद्ध ज्ञान देना ही उपनिषदों का दर्शन है।[12]

उपनिषदों में जीवात्मा एवं ब्रह्म के स्वरूप में किसी प्रकार का भेद नहीं है व दोनों एक ही तत्व हैं। उपनिषदों में आत्मा की पवित्रता को अत्यधिक महत्व प्रदान किया गया है। जैसे आकाश सर्वत्र फैला हुआ है उसी प्रकार ब्रह्म सृष्टि के कण–कण में व्याप्त है। आत्मा व परमात्मा एक हैं। जब कुम्हार घड़ा बनाता है तब आकाश का एक खण्ड उस घड़े में भी व्याप्त हो जाता है। घड़ा शरीर और घड़े के भीतर व्याप्त आकाश ही आत्मा है। जब घड़ा फूट जाता है तो उसमें बँधा हुआ आकाश फिर बड़े आकाश में मिल जाता है। उपनिषद कर्म फलवाद के सिद्धांत को याथार्थ मानते हैं, अर्थात् मनुष्य अपने अच्छे–बुरे कर्मों के अनुसार अच्छा–बुरा फल प्राप्त करता है। उपनिषदों के अनुसार जीवन का महान उद्देश्य ब्रह्म के साथ एकता प्राप्त करना है एवं यह अज्ञान के नाश होने पर ही संभव है। जिसने ब्रह्म व आत्मा की एकता को जान लिया है वही **'मुक्ति'** प्राप्त कर सकता है। उसके लिए कर्म संन्यास आवश्यक है। सामान्य रूप से उपनिषद विश्वास अथवा कर्म की अपेक्षा **'ज्ञान'** अथवा **'आत्म साक्षात्कार'** द्वारा मुक्ति की घोषणा करते हैं।

उपनिषद की मंजुल कल्पना के अनुसार यह शरीर रथ है, बुद्धि सारथि है, मन लगाम है, इन्द्रियाँ विषय मार्ग पर ले चलने वाले घोड़े हैं और आत्मा इस रथ का स्वामी है (कठोपनिषद 1/3/3)।[13]

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च,
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।

आत्मा व ब्रह्म एक ही तत्व हैं। ब्रह्म के दो रूप हैं– **'सगुण व निर्गुण'**। सगुण रूप में वह इस जगत को उत्पन्न करता है, स्थिति काल में इसका प्राण धारण करता है और प्रलय काल में अपने में लीन कर लेता है। निर्गुण रूप ही उसका श्रेष्ठ रूप है। ब्रह्म का प्रतिपादन शब्दों

द्वारा नहीं हो सकता है। उपनिषदों ने उसके लिए **'नेति–नेति'** शब्द का प्रयोग किया है। ब्रह्म का साक्षात्कार ही उपनिषदों का चरम लक्ष्य है।

आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म तथा कर्मफल वाद के विषय में जो हल्की महीन कल्पनाएँ थीं, उपनिषदों में आकर उनका विपुल विकास हो गया और भारतवासी यह मानने लगे कि धर्म का जो असली सूक्ष्म तत्व है वह यज्ञवाद और पशु–हिंसा से उपलब्ध नहीं हो सकता। सारी सृष्टि ब्रह्म से व्याप्त है। इस मत के प्रचार से हिंसा की भावना ढीली होने लगी। लोग यह मानने लगे कि मनुष्य के समान पशु–पक्षी और पेड़–पौधे भी हिंसा नहीं, प्रेम व आदर के अधिकारी हैं। उपनिषदों ने **'संन्यास'** व **'वैराग्य'** की भावना को प्रेरित किया। अत एव, पहले जहाँ लोग सांसारिक सुखों के भोग के लिए डटकर परिश्रम करने में ही आनंद मानते थे, वहीं अब वे गृहस्थाश्रम को छोड़कर असमय में ही वैराग्य व संन्यास लेने लगे।[14]

वैदिक सभ्यता कर्मठ मनुष्य की सभ्यता थी जो सोचता कम, काम अधिक करता था; जिसे नरक की चिंता नहीं, सदैव स्वर्ग का ही लोभ था; जो जीवन को दुःखों का आगार नहीं, सुख व आनंद का साधन मानता था। मगर उपनिषदों ने दिमाग के अनेक दरवाजे खोल दिए ओर आदमी अनेक सवालों के चक्कर में पड़ गया। **सृष्टि क्या है? जीव क्या है? जन्म के पहले क्या था? मरने के बाद क्या होगा? क्या जीवन मरने के बाद समाप्त हो जायेगा? क्या मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा? यदि हाँ तो इसका प्रमाण क्या है?** इन सवालों की हल्की पतली झाँकी वेदों में भी प्रछन्न थी लेकिन वेदकालीन मनुष्य इन प्रश्नों के चक्कर में नही पड़ा था। उपनिषदों ने आदमी को कुरेद–कुरेद कर उसे सवालों के हवाले कर दिया जिनका उत्तर उपनिषदकारों ने बखूबी दिया है। विश्व के अनेक दार्शनिक उपनिषदों में इन सवालों के उत्तर पाकर चमत्कृत हैं। आचार्य विनोबा भावे श्रीमद्भगवद्गीता को अपनी माँ तथा उपनिषद को अपनी माँ की माँ कहते थे।[15]

उपनिषद वास्तव में, एक आध्यात्मिक मान सरोवर है जिसमें डूबने वाले वक्ति को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (1868–1953) ने उपनिषदों के संदर्भ में लिखा है, ''उपनिषदवेद का ज्ञानकाण्ड हैं। यह चिर प्रदीप्त वह ज्ञान–दीपक जो सृष्टि के आदि से प्रकाश देता चला आ रहा है और प्रलय पर्यन्त प्रकाशित रहेगा। इसके प्रकाश में अमरत्व है जिसने सनातन धर्म के मूल का सिंचन किया है।'' प्राच्य और पाश्चात्य सभी विद्वान इसके विपुल ज्ञान भंडार से अपनी ज्ञान–पिपासा शांत करते रहे हैं। माध्यकालीन भारत में शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह उपनिषदों से इतना प्रभावित हुआ कि उसने स्वयं पचास के लगभग प्रमुख उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कर डाला। बर्नियर उपनिषदों के फारसी अनुवाद की कुछ पाण्डुलिपियाँ फ्रांस ले गया था।[16]

आधुनिक युग में प्रसिद्ध जर्मन विद्वान **शोपेन हावर** ने इसे मानव मस्तिष्क की सबसे ऊँची रचना मानकर अपने गुरु त्रयी में काण्ट एवंप्लेटो के साथ स्थान दिया। उसके अनुसार, ''उपनिषदों के प्रत्येक वाक्य से बहुत गहरी, मूलभूत व उत्कृष्ट विचारधारा उत्पन्न होती है तथा जो पूरी तरह एक पवित्र व गंभीर भाव से ओत–प्रोत है। सारे संसार में उपनिषदों से बढ़कर

लाभकारी व जीवन को ऊँचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नहीं है।''[17] उसने उपनिषदों को अपने जीवन में दुःखों से मुक्ति का उपाय माना। मैक्समूलर, डासन, जी0 आर्क आदि ने इसे सत्य को जानने का सर्वश्रेष्ठ साधन माना। स्वामी विवेकानंद ने उपनिषदों को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वाधीनता का मूलमंत्र माना है।[18]

आधुनिक काल में भारतीय पुनर्जारण व भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अनेक महान नेता उपनिषदों के ज्ञान से प्रभावित थे तथा उनके सिद्धांतों व आदर्शों में उपनिषदों के प्रभाव की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है और वे इसे स्वीकार भी करते हैं। भारतीय पुनर्जागरण का उद्घोष बंगाल से लेकर पंजाब, महाराष्ट्र और सुदूर दक्षिण तक विस्तृत था। बंगाल में ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहन राय तथा राम कृष्ण मिशन के संस्थापक स्वामी विवेकानंद, पजाब में स्वामी रामतीर्थ के वेदांत मिशन, दक्षिण पश्चिम भारत की एकेश्वरवादी संस्था थियोसोफिकल सोसाइटी, केरल में अद्वैताचार्य नारायण गुरु, आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती तथा अनेक अन्य विद्वानों ने उपनिषद दर्शन व उसके रहस्यों को जनसाधारण के लिए सुलभ किया। उपनिषदों में सन्निहित ज्ञान को बहुत ही सरल तरीके से उन्होंने जन–जन तक पहुँचाया। स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन निरंतर उपनिषदों द्वारा स्थापित वेदांत दर्शन के प्रसार में संलग्न है। काका साहेब कालेलकर ने विवेकानंद के विषय में लिखा है कि, ''स्वामी विवेकानंद ने सुधारक तथा उद्धारकदानों के बीच समन्वय करके बुद्धिवाद, आध्यात्म, स्वदेशी संस्कृति के प्रति अभिमान तथा सामाजिक सुधार के अनुकूल एक ऐसा सुन्दर वायुमंडल पैदा किया, तथा भारत अब प्रबुद्ध हुआ है ऐसी घोषणा कर वेदांत की पताका विदेश में भी फहराई।[19]

लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, चक्रवर्ती राजगोपाला चार्य, आचार्य विनोबा भावे, काका साहब कालेलकर, किशोर लाल भाई मशरू वाला तथा महादेव देसाई आदि अनेक महापुरुष उपनिषदों के ज्ञान से न केवल प्रेरणा ली अपितु उसे अपने जीवन में उतार कर पुष्पित व पल्लवित किया। **श्रीमती एनी बेसेन्ट** ने उपनिषदों को **'मानव मस्तिष्क का सर्वोत्तम परिणाम'** बताया है। **डा0 सम्पूर्णानन्द** के अनुसार, ''उपनिषदों में वे सिद्धांत स्पष्ट रूप से दिये गये हैं जिनके आधार पर कोई भी विचारशील मनुष्य अपने लिए कर्तव्य का निश्चय कर सकता है। इस पथ पर चलने वाला अपने लिए तो निःश्रेयस का द्वार खोल ही लेगा, उसके तप–पूत व्यक्तित्व के प्रकाश में मानव समाज भी अभ्युदय पथ पर आरूढ़ हो सकेगा।'' निस्संदेह उपनिषदों का प्रत्येक उपदेश मानव समाज के लिए अमूल्य और अनुपम है तथा उपनिषदों के वचनों को पढ़कर व उनका आचरण कर कितने ही योगी पुरुष जीवन मुक्त होकर ब्रह्म लीन हो गये हैं।

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने यरवदा जेल में **'ईशोपनिषद'** का अध्ययन करने और उसे कंठाग्र करने बाद उसके विषय में कहा था कि, ''अब मैं अन्तिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यदि सारे उपनिषद तथा हमारे अन्य सारे धर्मग्रंथ अचानक नष्ट हो जायें और 'ईशोपनिषद का केवल पहला श्लोक हिंदुओं की स्मृति में कायम रहे तो भी हिंदू धर्म सदा जीवित रहेगा।''[20] ईशोपनिषद का प्रथम श्लोक है– **''ईशा वास्य मिदं सर्वं यत्किंच जगत्यांजगत। तेनत्यक्तेन भुंजीथाः। मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।'' अर्थात् विश्व में हम जो कुछ भी देखते हैं, सब**

में ईश्वर की सत्ता व्याप्त है। इसका त्याग करो और इसका भोग करो अथवा वह तुम्हें जो कुछ दे उसका भोग करो। किसी की सम्पत्ति को लोभ की दृष्टि से मत देखो। 1936 में गांधीजी ने लिखा था कि, ''मैं तो कहता हूँ कि मेरे विचार वास्तव में गीता, रामायण, महाभारत और उपनिषदों के अध्ययन का ही परिणाम हैं।[21] प्रसिद्ध गांधीवादी संत श्रीविनोबा भावे की उपनिषदों पर अनेक लेख व पुस्तकें प्रकाशित हुईं (विनोबा ग्रंथावली भाग–2 में संकलित) तथा उपनिषद की कल्पना पर उन्होने आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारण किया।

आज विश्व मानव इतिहास के सबसे संकटपूर्ण दौर से गुजर रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुई प्रगति ने एक ऐसे बौद्धिक आंदोलन को जन्म दिया है जो बिना सोचे–समझे प्राचीन जीवन मूल्यों व ज्ञान परंपरा को बेवजह चुनौती दे रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने मनुष्य की अंतरात्मा को मार दिया है और उसे तरह–तरह के प्रलोभनों का दास बना दिया है। उसक पास आत्मोन्नति के विषय में सोचने का अवकाश ही नहीं है। वह धन, शक्ति, स्वामित्व व अधिकार के लिए पागल हो रहा है। विश्व के देशों के प्रशासकों की कथनी व करनी मे कोई ताल–मेल नहीं है। प्राचीनकाल के इतिहास, राजनीति, समाजशास्त्र, विज्ञान तथा दर्शन शनैः–शनैः लुप्त हो रहे हैं। विश्व प्रदूषण, महामारी, प्रकृतिक प्रकोप, आतंकवाद और ऐसी हजारों समस्याओं से जूझ रहा है। सर्वत्र एक निराशा व्याप्त है और अनीश्वरवादियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। परमाणु शक्ति ने विश्व को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। ऐसी विषम परिस्थिति में विश्व शांति के लिए उपनिषदों में सन्निहित ज्ञान के प्रसार करने वाले विचारकों, प्रचारकों व उद्धारकों की आवश्यकता है जो संसार को इस विभीषिका से बचा सकें।

संक्षेप में, उपनिषद भारतीय दर्शन के मूल स्रोत हैं। बिना उपनिषदों के भारतीय सांस्कृतिक परंपरा व भारतीय मनीषा की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। उपनिषद साहित्य ने हमारे समक्ष सत्य का वह सिद्धांत रखा है जिसकी तरफ कोई उँगली भी नहीं उठा सकता है। भारतीय संस्कृति में उपनिषदों का स्थान अक्षुण्ण है। उपनिषदों में सन्निहित ज्ञान के कारण ही भारत को समस्त विश्व ने 'जगद्गुरु' स्वीकार किया था। बृहदारण्यक उपनिषद (1:3:28) का मानवता के लिए दिया गया अद्वितीय संदेश आधुनिक युग में अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है– ''**ऊँ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतगमय। ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः।**'' अर्थात् (हमें) असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो। सर्वत्र शान्ति हो।

संदर्भ

1. उपाध्याय, बलदेव,– संस्कश्त साहित्य का इतिहास' (शारदा मन्दिर, वराणसी, 1968), पृष्ठ – 31
2. मिश्र, जयशंकर – 'प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास' (बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना), पृष्ठ – 3
3. एफ मैक्समूलर– 'उपनिषद्स'(ऑक्सफोर्डः क्लैरेंडनप्रेस, 1979), देखिए प्रीफेस, पृष्ठ 28
4. गेडेन, ए0एस0 –'द फिलासोफीऑफउपनिषद्स', (टी ऐंडटीक्लार्क, एडिनबर्ग, 1908), पृष्ठ 373

5. शंकरभाष्य सहित 'कठोपनिषद', (गीता प्रेस, गोरखपुरए 1951), पृष्ठ : 113.114
6. भारद्वाज, रमेंश (संपा0) – 'आचार्य काका साहब कालेलकर द्वारा संकलित उपनिषत्पाठावली', (विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2009), देखिए पुरोवाक, पृष्ठ – 22
7. रंगनाथानन्द, स्वामी– 'इंट्रोडक्शनटू द मैसेजऑफउपनिषद्स', (भारतीय विद्याभवन, दिल्ली, 1971),पृष्ठः 7–8
8. फेरर, अल्बट– 'इंटीगरल एजुकेशनइनऐंशेंटइंडियाफ्रामवेदाज ऐंडउपनिषद्सटूवेदान्त',देखिए इंटरनेशनलजर्नलऑफरिसर्चग्रन्थालयाः पृष्ठ 281–295
9. गेखले, बी0जी0 –ऐंशेंटइंडिया', (एशिया पब्लिशिंगहाउस, बाम्बे, 1954), पृष्ठः 145–147
10. बाशम, ए0एल0 – 'द वान्डरदैटवाज़ इंडिया', (रूपा ऐण्डकम्पनी, न्यूडेलही,1981), पृष्ठः 234–235
11. बशम, ए0एल0 – 'ए कल्चरलहिस्ट्रीऑफइंडिया', (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीप्रेस, न्यूडेलही, 1975), पृष्ठः 112–113
12. भारद्वाज, रमेंश (संपा0) – 'आचार्य काका साहब कालेलकर द्वारा संकलित उपनिषत्पाठावली', (विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2009), देखिए पुरोवाक, पृष्ठ – 24
14. भट्टाचार्य, ए0एन0 – 'वनहन्ड्रेड ऐण्डट्वल्वउपनिषद्स ऐण्डदीअरफिलासोफी', (परिमल पब्लिकेशन, डेलही,1987), देखिए इंट्रोडक्शन
15. शर्मा, श्रीराम आचार्य – '108 उपनिषदें' ज्ञान खण्ड,, (युग निर्माण योजना, मथुरा), देखिए भूमिका
16. गैरट, जी0टी0 – 'द लीगेसीऑफइंडिया' (ऑक्सफोर्डः क्लैरेंडनप्रेस, 19620), पृष्ठ 31
17. वही, पृष्ठ 32
18. शर्मा, श्रीराम आचार्य – पूर्वोक्त, देखिए भूमिका
19. कालेलकर, काका साहब – 'गुजरात में गांधी युग', पृष्ठः 23–24
20. भारद्वाज, रमेंश – पूर्वोक्त, पुरोवाक, पृष्ठ 10
21. हरिजन (3/10/36)